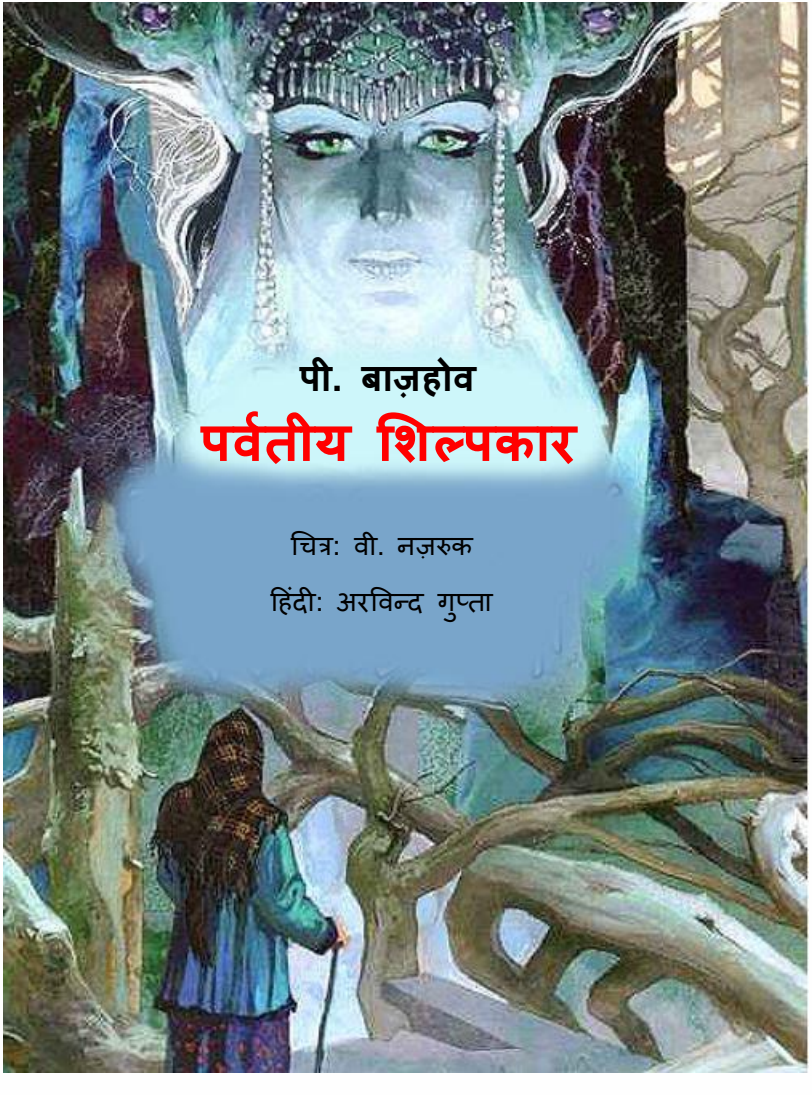
पी. बाज़होव
पर्वतीय शिल्पकार
चित्र: वी. नज़रुक
हिंदी: अरविन्द गुप्ता

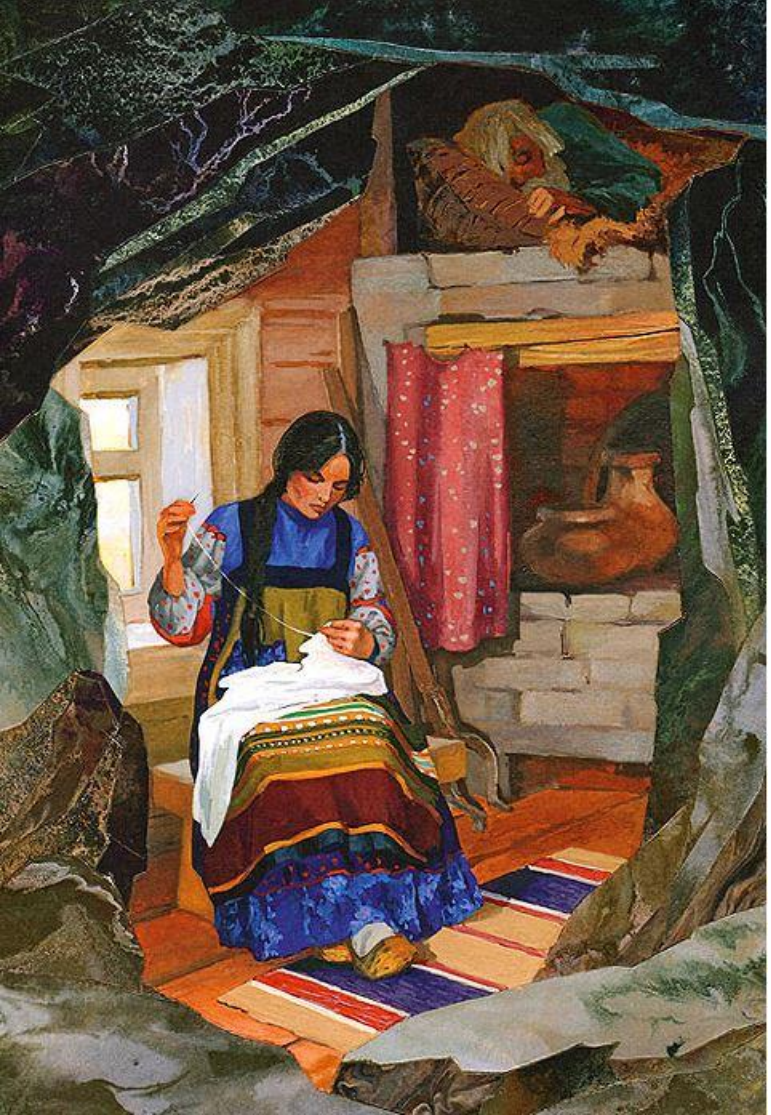

डेनिलो के गायब होने के बाद उसकी मंगेतर कात्या अविवाहित रही. दो साल बीत गए, या शायद तीन, और वह उम्र पार कर रही थी. हमारे इलाके में, बीस या उसके आसपास की युवतियों को बूढ़ी माना जाता है. युवक बहुत कम ही ऐसे युवतियों को शादी का प्रस्ताव भेजते हैं. मुख्य रूप से विधुर लोग ही उनके साथ शादी के बारे में सोचते हैं. लेकिन कात्या, वह वास्तव में सुंदर रही होगी, क्योंकि लड़के अभी भी उसके पीछे पड़े हुए थे. लेकिन उसने किसी को भी स्वीकार नहीं किया. "मैंने डेनिलो से वादा किया है," उसने कहा. कई लोगों ने उससे समझदारी से काम लेने के लिए कहा.

"सोचो कि तुम क्या कर रही हो! तुमने वादा किया था, लेकिन कुछ नहीं हुआ. अब उसके बारे में सोचने से कोई फायदा नहीं है. डेनिलो मर चुका होगा या कहीं और चला गया होगा."

लेकिन कात्या ने किसी की नहीं सुनी.

"मैंने डैनिलो से वादा किया है. शायद वह अभी भी वापस आएगा."

"लगता है वो बहुत पहले का मर चुका है."

लेकिन कात्या को कोई हिला नहीं सका.

"क्योंकि किसी ने उसे मरा हुआ नहीं देखा, इसलिए डेनिलो मेरे लिए जीवित है."

लोगों ने सोचा कि युवती पागल हो गई है और उन्होंने उसे अकेला छोड़ दिया. कुछ लोगों ने तो उनका मज़ाक भी उड़ाया, उसे "मृत आदमी" की दुल्हन भी बुलाया. यह उपनाम उसके साथ चिपक गया, और जल्द ही उसे कात्या मर्टव्याकोवा (एक लाश) कहा जाने लगा, जैसे कि उसका पहले कभी कोई और नाम ही न था.

लगभग उसी समय एक बीमारी आई और उसमें कात्या के पिता और माँ दोनों की मृत्यु हो गई. उसके बहुत सारे रिश्तेदार थे. तीन भाई-बहन थे, जो सभी शादीशुदा थे. लेकिन वे तुरंत झगड़ने लगे कि उनके पिता का स्थान अब कौन लेगा. कात्या को लगा कि उस सब का नतीजा कुछ भी अच्छा नहीं होगा.

"मैं जाऊंगी और प्रोकोपिच के साथ रहूंगी," कात्या ने कहा, "वह बूढ़ा और कमजोर है, मैं उसकी कुछ देखभाल कर सकती हूं."

बेशक उसके भाई-बहन इसके ख़िलाफ़ थे.

"यह उचित नहीं है. प्रोकोपिच बूढ़ा है, यह सच है, लेकिन फिर भी लोग उसके बारे में उल्टी-सीधी बातें कह सकते हैं."

"मुझे उससे क्या फर्क पड़ेगा?" उसने जवाब दिया. "उससे मेरी जीभ तो गंदी नहीं होगी. और प्रोकोपिच कोई अजनबी नहीं है, वह मेरे डेनिलो का पालक-पिता है. और मैं उसे 'पिता' कहकर ही बुलाऊंगी."

फिर कात्या चली गयी. निश्चित रूप से, उसके परिवार ने उसे रोकने की बहुत कोशिश नहीं की. चलो परिवार से एक शख्स कम हुआ तो उतनी ही परेशान कम हुई, उन्होंने सोचा. और जहां तक प्रोकोपिच का सवाल है, वह कात्या को पाकर काफी खुश हुआ.

प्रोकोपिच ने कहा, "मेरे बारे में सोचने के लिए धन्यवाद, कटेंका."

इसलिए उन्होंने मिलकर हाउसकीपिंग शुरू की. प्रोकोपिच अपनी बेंच पर काम करता था, जबकि कात्या बगीचे में, या खाना पकाने, बेकिंग वगैरह में व्यस्त रहती थी. केवल उन दोनों के लिए करने के लिए बहुत कुछ नहीं था, और कात्या तेज़ और सक्षम थी, वह जल्द ही घर का काम ख़त्म कर लेती थी; फिर वह सिलाई या बुनाई करने बैठ जाती थी. पहले तो सबकुछ ठीक-ठाक चलता रहा लेकिन थोड़ी दिनों बाद प्रोकोपिच बीमार पड़ने लगा. वह एक दिन काम करता था और दूसरे दिन बिस्तर पर पड़ जाता था. बुढ़ापा था, वह बस थक गया था, बस इतना ही. फिर कात्या सोचने लगी कि वे कैसे आगे बढ़ेंगे. "महिलाओं के शिल्प या कारीगरी से हमारा पेट नहीं भरेगा, और मैं कोई अन्य कोई कला-कौशल जानती नहीं हूं."

एक दिन उसने प्रोकोपिच से कहा: "पिताजी मुझे अपनी कला के बारे में कुछ सिखायें, शुरू में कुछ आसान चीजें."

लेकिन प्रोकोपिच केवल हँसा.

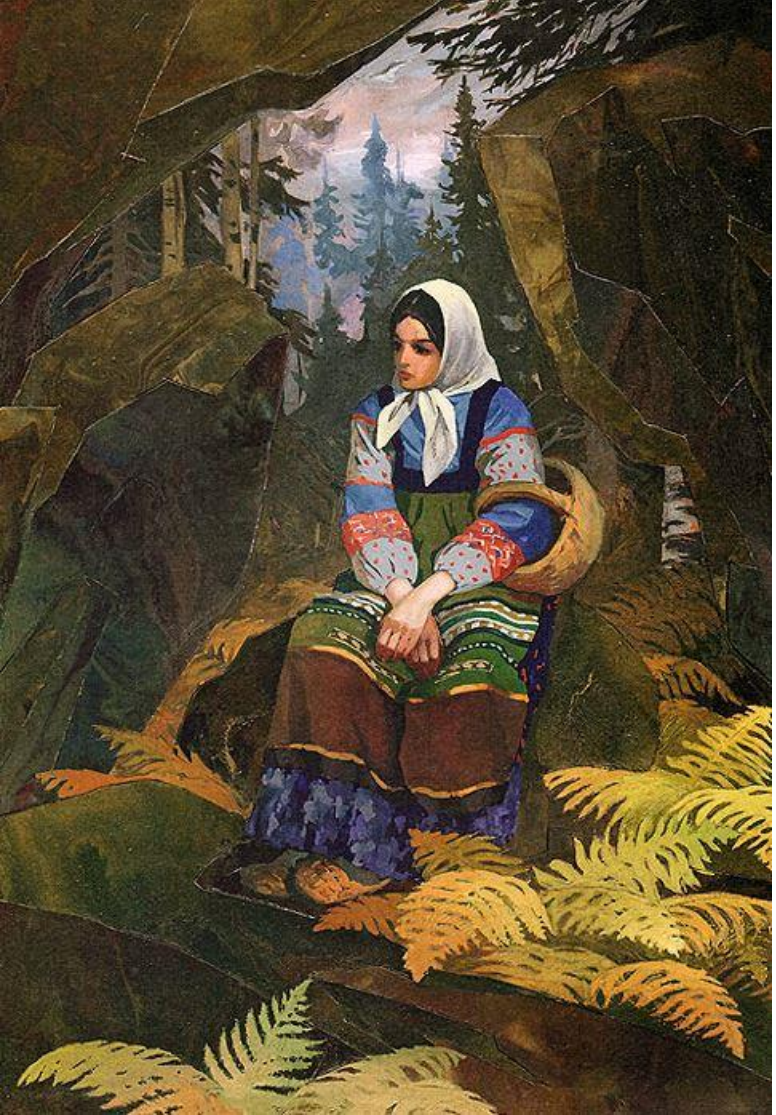

"तुम क्या सोच रही हो! मैलाकाइट पत्थर का काम महिलाओं का काम नहीं है. मैंने अपने पूरे जीवन में कभी भी ऐसी बात नहीं सुनी."

फिर भी जब वह काम पर होता तब कात्या, प्रोकोपिच के काम और कारीगरी को देखती थी. वह उसकी थोड़ी बहुत मदद भी करती थी, जितनी उससे बन सकती थी. कभी कुछ घिसने का काम या फिर चमकाने आदि का काम. प्रोकोपिच भी उसे कुछ छोटा-मोटा काम दिखाता था. निःसंदेह, वो वास्तव में बढ़िया काम नहीं दिखाता है. ब्रोच के लिए मेडेलियन, चाकू और काँटों के लिए हैंडल और इसी तरह के जो भी काम आते. वो सब सस्ता और घटिया सामान था. उनसे उसे केवल कुछ छोटे सिक्के ही मिलते थे, लेकिन उनसे भी मदद मिलती थी.

प्रोकोपिच अधिक समय तक जीवित नहीं रहा. फिर कात्या के भाई-बहन फिर से उसके पीछे पड़ गये.

"अब तुम्हें शादी करनी ही होगी, करोगे. तुम यहाँ अकेले नहीं रह सकती हो."

लेकिन कात्या ने उनसे मना किया.

"आप लोगों को चिंता करने की कोई बात नहीं है. मुझे आप लोगों का कोई साथ नहीं चाहिए. दानिलुश्को किसी दिन वापस आएगा. वह जो कुछ जानना चाहता है, वह सबकुछ पर्वत पर सीख लेगा, और फिर वह आएगा."

अंत में भाई-बहनों ने घबराकर हार मार ली.

"क्या तुम्हारा दिमाग सही है, कात्या? ऐसी बातें कहना भी पाप है. तुम एक ऐसे आदमी का इंतज़ार कर रही हूँ जो बहुत पहले ही मर चुका है! तुम अगली बार किसी भूत को देखोगी."

“मुझे भूतों से कोई डर नहीं लगता है," उसने कहा.

"लेकिन तुम क्या सोचती हो? तुम जीवित कैसे रहोगी?" उन्होंने पूछा.

"आपको इसके बारे में चिंता करने की ज़रूरत नहीं है," कात्या ने कहा. "मैं अकेले ही काम संभाल लूंगी."

खैर, फिर रिश्तेदारों ने सोचा कि प्रोकोपिच ने कुछ पैसे छोड़े होंगे, और फिर से उन्होंने अपना पुराना राग अलापना शुरू कर दिया.

"तुम मूर्ख के अलावा और कुछ नहीं हो! अगर तुम्हारे पास पैसा है, तो तुम्हें निश्चित रूप से घर में एक आदमी की जरूरत होगी. अन्यथा एक दिन कोई पैसों के पीछे आएगा, और मुर्गे की तरह तुम्हारी गर्दन मरोड़ देगा. और इस तरह तुम्हारा अंत होगा."

"जल्दी या देर से, मेरा अंत नियति तय करेगी."

भाई-बहन बहुत देर तक चिल्लाते रहे, कुछ आग्रह करते रहे, कुछ रोते रहे. लेकिन कात्या अपने मन की बात जानती थी.

"मैं अकेले ही काम संभाल लूंगी. मुझे तुम्हारे किसी के साथ की जरूरत नहीं है. मेरा अपना एक लड़का है."

निःसंदेह, वे बहुत गुस्सा हुए.

"फिर हमसे दूर रहो!"

"धन्यवाद," कात्या ने कहा, "प्यारे भाइयों और दयालु बहनों. मैं यह याद रखूंगी और आप लोग भी यह बात न भूलें."

वह उन पर हँसी, वह हँसी. फिर उन्होंने अपने पीछे दरवाज़े को कसकर धक्का दिया.

कात्या बिल्कुल अकेली रह गई थी. बेशक, पहले तो वह थोड़ा रोई, लेकिन फिर उसने कहा: "नहीं! मैं हार नहीं मानूंगी!"

उसने अपनी आँखें पोंछीं और अपने घर के काम में लग गई. उसने कपड़े धोए और सच में अच्छी साफ़-सफ़ाई की. जैसे ही उसका काम ख़त्म हुआ, वह काम करने वाले मेज़ पर चली गई. वहां भी उसने सब कुछ अपने मन के मुताबिक व्यवस्थित किया. जिन चीजों की उसे ज़रूरत नहीं थी, वो उसने अपने रास्ते से हटा दीं, और जो चीज़ उसे हर समय लगती थी वह उसने अपने बिल्कुल नज़दीक रखी. जब सब कुछ उसकी पसंद के अनुसार हो गया, तो वह काम करने बैठ गई.

"मैं अब अकेले एक मेडेलियन बनाने की कोशिश करूंगी."

उसने चारों ओर पत्थर की तलाश की, लेकिन वहां ऐसा कोई पत्थर नहीं था जो उसके काम आ सकता. उसके पास अभी भी डेनिलो के काँटेदार प्याले के टुकड़े थे, जिसे उसने संजोकर और एक अलग बंडल में लपेट कर रखा था. बेशक, प्रोकोपिच को बहुत सारे बड़े पत्थर थे, लेकिन अपनी मृत्यु तक वह हमेशा बड़े काम ही करता रहा था. इसलिए पत्थरों के सिर्फ बड़े-बड़े टुकड़े ही थे. क्योंकि छोटे-छोटे सभी पत्थरों का उपयोग सजावटी चीज़ें बनाने के लिए कर लिया गया था. "ठीक है," कात्या ने खुद से कहा, "लगता है मुझे खदानों के पास कूड़े के ढेर में जाना होगा, मुझे मुझे ज़रूर कुछ ऐसे पत्थर मिल जायेंगे जिनका मैं उपयोग कर सकूंगी."

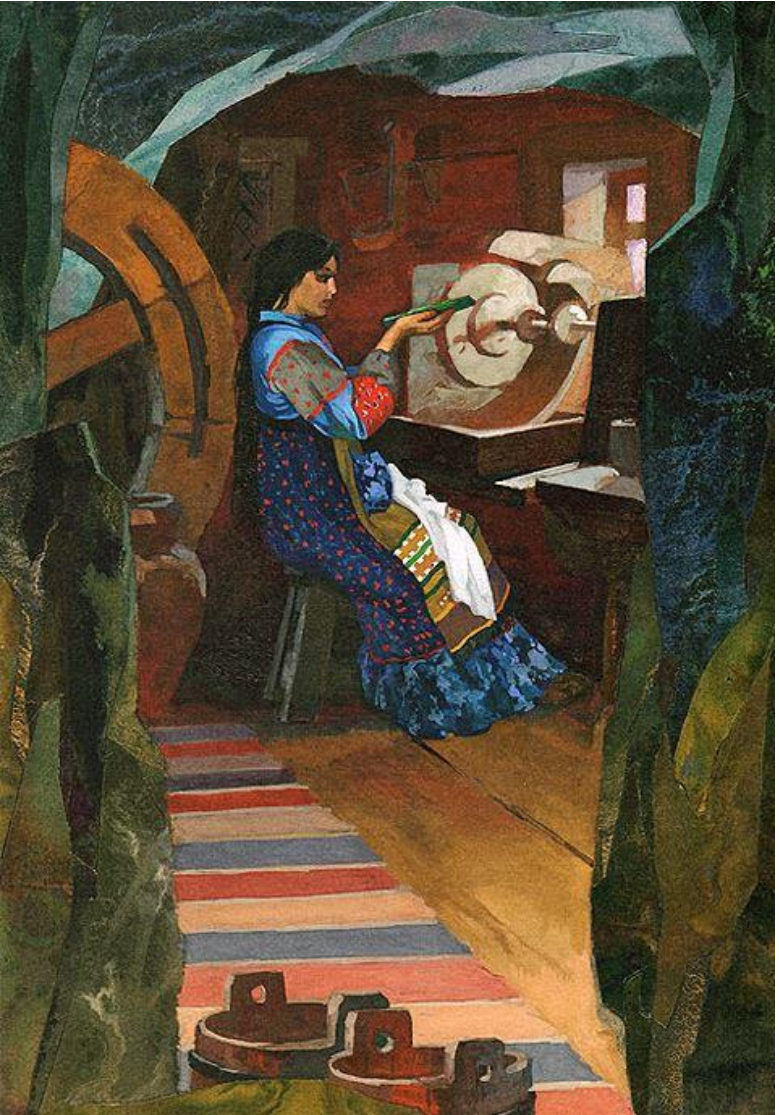

उसने डेनिलो और प्रोकोपिच को पत्थरों के लिए "सर्पेंट" पहाड़ी पर जाने के बारे में बात करते हुए सुना था. तो वह भी वहीं गई.

गुमेश्की पर हमेशा बहुत से लोग चट्टान के ऊपर अयस्क चुनते थे, और उसे घर ले जाते थे. जब कात्या अपनी टोकरी लेकर वहां गई तो वे सभी लोग उसकी ओर देखने लगे. कात्या को उनके घूरने का तरीका पसंद नहीं आया, इसलिए वह कूड़े के ढेर के पास से होकर पहाड़ी के दूसरी ओर चली गई. वहाँ अभी भी पेड़ खड़े थे, और कात्या उनके बीच से होते हुए सीधे सर्पेंट हिल तक गई और एक चट्टान पर बैठ गई. दानिलुश्को को याद करते ही उसका दिल दुखने लगा और उसके चेहरे से आँसू बहने लगे. वह बिल्कुल अकेली थी, केवल चारों ओर पेड़ थे, और वह उन्हें भागने दे सकती थी.

थोड़ा रोने के बाद कात्या ने नीचे देखा - और उसके पैरों के ठीक पास मैलाकाइट का एक टुकड़ा आधा दबा हुआ पड़ा था. बिना गैंती या सब्बल के वह उसे कैसे बाहर निकालेगी? लेकिन उसने पाया कि वह इसे अपने हाथ से थोड़ा हिला सकती थी. वो पत्थर बहुत मजबूती से नहीं फंसा था. उसे एक छड़ी मिली और वह उससे पत्थर के चारों ओर की जमीन खोदने लगी. उसने जितना संभव हो सके उतना खुरचा, उसे फिर से हिलाने की कोशिश की. फिर वो बहुत आसानी से ऊपर आ गया, एक टूटने की आवाज़ के साथ - जैसे सूखी टहनी टूटी हो. वह एक सपाट स्लैब था, बहुत बड़ा नहीं - मोटाई में तीन अंगुल, आपकी हथेली जितना चौड़ा और दो हाथ लंबा. कात्या को इस पर आश्चर्य हुआ.

"जैसे कि वो पत्थर मेरे लिए ही वहां रखा गया हो. देखो मैं इसे काटकर बहुत सारे ब्रोच बनाऊंगी."

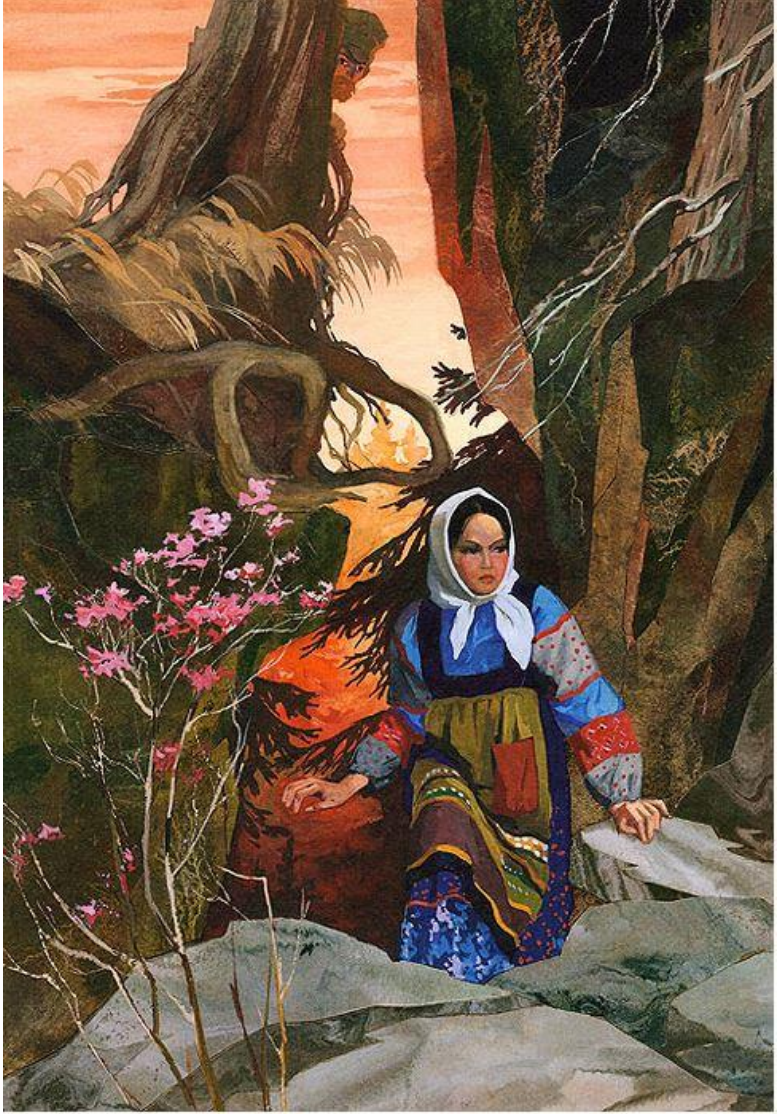

वह पत्थर को घर ले गई और उसके छोटे-छोटे टुकड़े करने के काम में लग गई. वो कोई जल्दी होने वाला काम नहीं था, और कात्या को घर के और भी बहुत से काम करने थे, इसलिए वह पूरे दिन व्यस्त रहती थी और उसके पास शोक मनाने का समय नहीं बचता था. लेकिन जब वह कार्यस्थल पर बैठती, तो वह दानिलुश्को के बारे में सोचने लगती थी.

काश, डेनिलो वहां मौजूद नये शिल्पकार को देख पाता जो उसकी और प्रोकोपिच की जगह पर बैठा था!

इससे भी बदतर वहां मज़ाक वाले लोग थे. ऐसे लोग आपको हमेशा मिलेंगे.

एक रात, छुट्टियों से ठीक पहले, जब कात्या देर तक काम कर रही थी, तो तीन युवा लड़के उसकी बाड़ पर चढ़ गए. क्या वे सिर्फ उसे डराना चाहते थे, या शायद कुछ और, वो किसी को नहीं पता. लेकिन वे सभी थोड़े नशे में थे. कात्या अपने काम और पत्थर घिसाई में व्यस्त थी और उसने उन्हें प्रवेश करते नहीं सुना था. पहली बार उसे तब पता चला जब उन्होंने भीतर के दरवाजे को खटखटाना शुरू किया.

"अरे, खोलो, मरे आदमी की बीबी! यहाँ कुछ ज़िंदा लोग तुम्हें देखने आए हैं!"

पहले कात्या ने साफ-साफ शब्दों में बोलने की कोशिश की. "चले जाओ, मुझे अकेला छोड़ दो, लड़कों!"

लेकिन वे दरवाज़े को पीटते रहे और किसी भी क्षण वे उसे तोड़ देते. तो फिर कात्या ने कुंडी हटा दी और दरवाज़ा पूरा खोल दिया.

"अगर हिम्मत है तो अंदर आओ. इसे पाने वाला पहला व्यक्ति कौन होगा?"

उन्होंने देखा — और वहाँ वह एक कुल्हाड़ी लेकर खड़ी थी.

"हम तो बस तुम्हें मूर्ख बना रहे थे," उन्होंने कहा.

"देखो मैं बेवकूफ नहीं बनने वाली हूँ?" कात्या ने जवाब दिया. "जो पहले अंदर पैर रखेगा उसके सिर पर यह कुल्हाड़ी गिरेगी."

हालाँकि वे नशे में थे, फिर भी वे देख सकते थे कि कात्या कोई बेवकूफ नहीं थी. कात्या लंबी थी, उसके कंधे सीधे थे और उसकी आँखों में एक भयानक भाव था. और उसने कुल्हाड़ी को ऐसे संभाला जैसे वह जानती हो कि इसका उपयोग कैसे किया जाता है. इसलिए उनमें से किसी ने भी अंदर घुसने की हिम्मत नहीं की. वे थोड़ा चिल्लाए, फिर वे बोले, हाँ, और फिर चले गए. निस्संदेह अन्य लड़के उन पर हँसे – देखो वे तीन लड़के एक लड़की से दूर भाग गए. उन्हें यह पसंद नहीं आया, इसलिए उन्होंने एक कहानी बनाई: कात्या अकेली नहीं थी, उसके पीछे एक मृत व्यक्ति खड़ा था.

"और वह इतना भयानक लग रहा था, कि हमारे पैर खुद दौड़ पड़े."

शायद दूसरे लड़कों ने इस पर विश्वास किया, या शायद नहीं, लेकिन फिर भी, यह बात फैलना शुरू हो गई.

"उस घर में बुरी और डरावनी चीजें हैं. यही कारण है कि वह अकेली रहती है."

बात कात्या तक पहुँची, लेकिन उसने इसकी कोई परवाह नहीं की. उसने सोचा, उन्हें गपशप करने दो, अगर वे थोड़े डर गए हों तो अच्छा होगा. आगे से वे अंदर आने की कोशिश नहीं करेंगे.

पड़ोसियों को उसे बेंच पर बैठा देखकर आश्चर्य हुआ और उन्होंने उसका मज़ाक उड़ाया.

"वो पुरुषों का काम करने की कोशिश कर रही है! हम देखेंगे कि वह कितनी दूर जाती है!"

वह तो और भी बुरा था. कात्या खुद सोच रही थी - क्या मैं उस काम को अकेले कर पाऊंगी? लेकिन उसने फिर से हिम्मत जुटाई. बाज़ार के लिए सामान बनाने के उसके लिए कौन सा कौशल चाहिए? जब तक सामान पॉलिश और चिकना हो, वो चलेगा... इतना तो मैं निश्चित रूप से कर सकती हूँ!

जब कात्या ने पत्थर को काटा, तो वह तुरंत देख सकी कि उसमें एक ऐसा पैटर्न था जो मुश्किल से ही कभी मिलता हो, और उसे एक नज़र में यह स्पष्ट हो गया कि वो उसे वो कहाँ और कैसे काटे. कात्या यह देखकर आश्चर्यचकित थी कि उसका काम कितना अच्छा चल रहा था. उसने पत्थर को सही जगहों पर काटा और फिर उसे घिसना शुरू कर दिया. यह इतना कठिन काम नहीं है, लेकिन उसके लिए भी अभ्यास की आवश्यकता थी. पहले तो काम धीरे-धीरे चला, और फिर उसे इसमें महारत हासिल हो गई. ब्रोच वास्तव में अच्छे और सुन्दर बने, और पत्थर भी बहुत कम बेकार हुआ, केवल वही बेकार हुआ जिसे घिसने के दौरान हटाना पड़ा.

कात्या ने अपने ब्रोच ख़त्म किए, फिर से पत्थर को निहारने लगी और आश्चर्यचकित हुई, और फिर सोचने लगी कि वो उन चीज़ों को कहाँ बेचे. प्रोकोपिच इस तरह की चीज़ें शहर में ले जाता था और उन्हें एक दुकान में बेचता था. कात्या ने इसके बारे में कई बार सुना था. इसलिए उसने वहां जाने का फैसला किया.

उसने सोचा, मैं दुकानदार से पूछूंगी कि क्या वे मेरा दूसरा काम भी लेंगे.

उसने अपने घर को ठीक किया और फिर पैदल चल पड़ी. पोलेवाया में किसी ने ध्यान नहीं दिया कि कात्या शहर गयी थी. जब उसे प्रोकोपिच की चीज़ें खरीदने वाले व्यापारी की दुकान का पता चला तो वह सीधे वहां गई. जब उसने चारों ओर देखा तो पाया कि वो दुकान पत्थर के बर्तनों से भरी हुई थी, और सामने शीशे की एक अलमारी थी जिसमें केवल मैलाकाइट के ब्रोच थे. वहाँ बहुत सारे लोग थे, कुछ खरीदारी कर रहे थे, कुछ अपना काम दिखा रहे थे. और व्यापारी वहाँ खड़ा था - सख्त और बहुत प्रतिष्ठित.

सबसे पहले कात्या को उससे बात करने में डर लगा. लेकिन फिर उसने हिम्मत जुटाई.

"क्या आपको मैलाकाइट ब्रोच की ज़रुरत है?"

व्यापारी ने अलमारी की ओर इशारा किया.

"क्या आप नहीं देख सकती हैं कि मेरे पास पहले से ही कितने ब्रोच हैं?"

उसने सामान बेचने वाले कारीगरों की बात सुना. "बहुत से लोग उस सामान को बनाने में अपना हाथ आजमा रहे हैं. लेकिन वो बस पत्थर को खराब करते हैं. वो यह भी नहीं देख सकते हैं कि ब्रोच के लिए एक अच्छे पैटर्न की आवश्यकता होती है."

कारीगरों में से एक पोलेवाया का था, उसने व्यापारी को एक तरफ खींच लिया और उसके कान में कहा: "उस लड़की में कुछ कमी है. पड़ोसियों ने उसे काम करते देखा है. उसने जरूर कोई बर्बाद ब्रोच बनाया होगा."

फिर व्यापारी कात्या की ओर मुड़ा और उसने कहा: "अच्छा, मुझे दिखाओ कि तुम्हारे पास क्या है."

कात्या ने उसे एक ब्रोच सौंपा. उसने उस पर एक नजर डाली और उसे घूरकर देखा.

"तुमने यह कहाँ से चुराया है?"

निःसंदेह, इससे कात्या गुस्सा हुई और उसने साहसपूर्वक अपनी बात रखी.

"तुम्हें उस महिला के बारे में ऐसा कहने का कोई अधिकार नहीं है जिसे तुम जानते भी नहीं हो? बस यहाँ देखो, अगर तुम अंधे नहीं हो, तो बताओ कि मैंने उन सभी ब्रोच को कहाँ से चुराया है, सभी में एक ही जैसा पैटर्न है? मुझे वह बताओ!" और कात्या ने उन्हें काउंटर पर उंडेल दिया.

व्यापारी और कारीगरों ने देखा - हाँ, उन सब में एक ही पैटर्न था. और एक ऐसा पैटर्न जिसे आप अक्सर नहीं देखते हैं. बीच में एक पेड़ उग रहा था, और एक पक्षी टहनी पर बैठा था, और नीचे एक और पक्षी था. यह बहुत ही स्पष्ट और साफ-सुथरा काम था. खरीदारों ने बात सुनी और फिर उन्हें देखने के लिए भीड़ लग गई, लेकिन व्यापारी ने ब्रोच को ढक दिया. उसको एक बहाना जो मिल गया था.

"आप उन्हें ढेर में ठीक से नहीं देख पाएंगे. मैं उन्हें कांच के नीचे रख दूँगा. फिर आप जो चाहें चुन सकते हैं." फिर उसने कात्या से कहा: "उस दरवाजे से अंदर जाओ. तुम्हें एक मिनट में अपने पैसे मिल जायेंगे."

कात्या चली गई, और व्यापारी उसके पीछे-पीछे गया. उसने दरवाज़ा बंद कर दिया और उससे पूछा: "तुम उनके लिए क्या चाहती हो?"

कात्या को पता था कि प्रोकोपिच को हमेशा क्या कीमत मिलती थी और उसने वही कीमत बताई. लेकिन व्यापारी केवल हँसा.

"अरे? वह बहुत अधिक है? मैंने पोलेवाया कारीगर प्रोकोपिच और उसके पालक-पुत्र डेनिलो को छोड़कर कभी भी किसी को इतनी कीमत नहीं दी है. लेकिन वे मास्टर कारीगर थे."

"मैंने इसके बारे में उनसे सुना है," कात्या ने कहा. "लेकिन मैं भी उसी परिवार की हूं."

"अच्छा तो यह बात है," व्यापारी आश्चर्यचकित हुआ. "फिर मुझे लगता है कि डेनिलो ने यह चीजें तुम्हारे पास छोड़ी होंगी?"

"नहीं," उसने कहा, "यह मेरा अपना काम है."

"क्या डेनिलो का तुम्हारे पास कुछ पत्थर बचा था, क्या तुमने?"

"नहीं वो पत्थर मैंने खुद ही ढूंढा."

कोई भी देख सकता था कि व्यापारी को उस पर विश्वास नहीं हुआ, लेकिन उसने मोलभाव नहीं किया. उसने उसके साथ ईमानदारी से समझौता किया और उससे यहां तक कहा: "यदि तुम उस तरह का और भी सामान बनाओ, तो उन्हें यहां ले आना. मैं हमेशा उन्हें खरीदूंगा और तुम्हें अच्छी कीमत दूंगा."

कात्या सचमुच बहुत खुश होकर चली गई. इतना सारा पैसा पाकर वो बहुत खुश थी! व्यापारी ने ब्रोच शीशे के नीचे रख दिए और खरीदार दौड़ पड़े.

"कितने के?"

बेशक, व्यापारी ने खुद को धोखा नहीं दिया था - उसने जो कात्या को दिया था उसकी दस-गुना कीमत ग्राहकों को बताई, और लोगों से कहता रहा: "आपने ऐसा पैटर्न पहले कभी नहीं देखा होगा. यह पोलेवाया के मास्टर शिल्पकार डैनिलो द्वारा बनाया गया है. इससे बेहतर कोई ब्रोच नहीं हो सकता है."

कात्या घबराई हुई घर आई.

ज़रा सोचो! मेरे ब्रोच उन सभी में सर्वश्रेष्ठ हैं! मुझे पत्थर का एक अच्छा टुकड़ा मिल गया. किस्मत ने मेरा साथ दिया... लेकिन फिर उसने अचानक सोचा:

कहीं वो दानिलुश्को का उपहार तो नहीं था?

जैसे ही उसने यह सोचा, उसने बिना समय गंवाए तेजी से सर्पैंट हिल की ओर प्रस्थान किया.

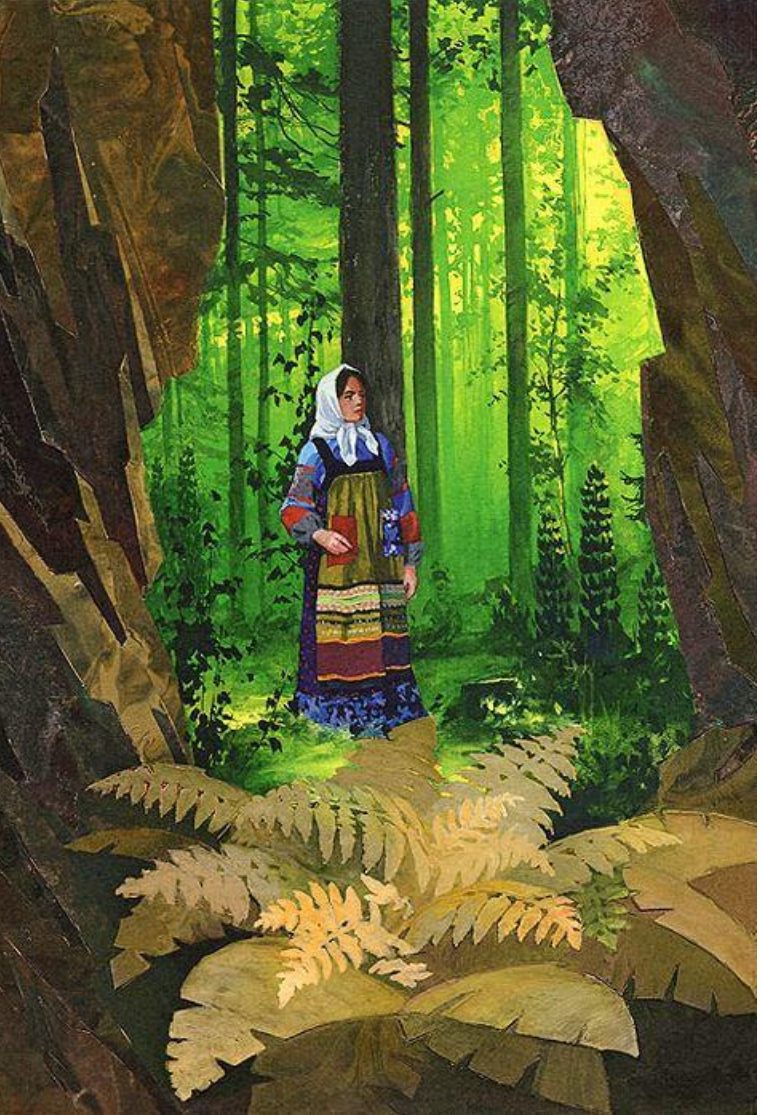

अब, मैलाकाइट तराशने वाला कारीगर जो कात्या को मूर्ख बनाना चाहता था, वह भी अपने घर पहुंच गया था. और वह वास्तव में ईर्ष्यालु था, क्योंकि वो जानना चाहता था कि कात्या को ऐसा दुर्लभ पैटर्न कहाँ मिला था. उसने सोचा, मुझे देखना होगा कि उसे वो पत्थर कहाँ से मिला. शायद प्रोकोपिच या डेनिलो ने उसे कोई नई जगह दिखाई हो.

उसने देखा कि कात्या कहीं भाग रही है, और फिर वो भी उसके पीछे निकल पड़ा. वह गुमेश्की के एक तरफ और सर्पेंट हिल के ऊपर कहीं घूमी. उसने मन ही मन सोचते हुए पीछा किया: वहाँ सब जंगल होगा. मैं सीधे छेद तक रेंगने में सक्षम हो जाऊंगी.

वे जंगल में घुस गये. वह कात्या के काफी करीब आ गया. लेकिन कात्या ने कभी कुछ नहीं सोचा, कभी पीछे मुड़कर नहीं देखा न ही वो कुछ सुनने के लिए रुकी. वह आदमी यह सोचकर सचमुच खुश था कि उसे इतनी आसानी से एक नई जगह मिल जाएगी. तभी अचानक किनारे से कुछ शोर हुआ और वह थोड़ा भयभीत होकर इंतजार करने लगा. क्या हो सकता था? और जब वह वहाँ खड़ा होकर सुन रहा था, कात्या गायब हो गई. उसने दौड़ना शुरू कर दिया, वह जंगल में एक भूलभुलैया के चारों ओर घूमता रहा, इसलिए उसे मुश्किल से उत्तरी तालाब मिला, जो गुमेशकी से लगभग दो मील की दूरी पर था.

कात्या ने कभी सपने में भी नहीं सोचा था कि कोई उस पर नज़र रखे होगा. वह पहाड़ी पर चढ़ गई, उसी स्थान पर जहां उसे पत्थर का पहला स्लैब मिला था. ऐसा लग रहा था कि छेद बड़ा हो गया हो, और किनारे पर उसे पहले की तरह एक और स्लैब दिखाई दिया. उसने उसे हिलाया और वह हिल गया, फिर वो टहनी की तरह टूट गया. कात्या ने वह पत्थर उठाया और फिर रोने और विलाप करने लगी. ठीक है, जिस तरह लड़कियां और पत्नियाँ तब करती हैं जब उनके पति मर जाते हैं, उन सभी शब्दों के साथ जो वे सोच सकती हैं. "तुम कहाँ चले गए, तुमने मुझे क्यों छोड़ दिया, मेरे प्रिय?" और इसी तरह.

वह कुछ रोई और फिर उसे बेहतर महसूस हुआ; फिर वह खदानों की ओर देखते हुए खड़ी होकर सोचती रही. वह एक प्रकार की ग्लेड था जिस पर वह थी. चारों ओर पेड़ ऊँचे और घने थे, लेकिन उसके और खदानों के बीच वे छोटे थे. शाम हो रही थी. ढलान के नीचे घने जंगल के कारण घास के मैदान में अंधेरा था, लेकिन जहाँ उसने देखा वहाँ सूरज अभी भी चमक रहा था. ऐसा लग रहा था मानों आग लग गई हो और फिर सारे पत्थर चमक उठे.

यह अजीब लग रहा था, और वह थोड़ा करीब जाना चाहती थी. उसने अपना पैर हिलाया और उसके नीचे कुछ टूट गया. उसने उसे वापस खींच लिया और नीचे देखा - और उसके नीचे कोई जमीन नहीं थी. वह एक ऊँचे पेड़ पर खड़ी थी, ठीक सबसे ऊपर. और उसके चारों ओर उसके समान अन्य वृक्षों की चोटियाँ भी थीं. उनके बीच में वह नीचे घास और फूल देख सकती थी, लेकिन वे उस तरह के नहीं थे जैसा वह जानती थी.

कोई और होता तो सच में डर गया होता, संभवतः उसने चिल्लाना शुरू कर दिया होता, लेकिन कात्या, वह कुछ और ही सोच रही थी... यह खुल गया है, पहाड़ खुल गया है. काश मुझे दानिलुश्को के दर्शन हो जाते!

उसने इसके बारे में सोचा ही नहीं था, तभी उसने पेड़ों के बीच से एक छेद से किसी को आते हुए देखा; वह दानिलुश्को की तरह था और उसने अपनी बाहें ऊपर उठाईं जैसे कि वह कुछ कहना चाहता हो. और कात्या, उसने दोबारा नहीं सोचा, उसने खुद को उसकी ओर फेंक दिया - पेड़ के ऊपर से! - ठीक है, और वह वहीं जमीन पर गिर गई जहां वह पहले खड़ी थी. इसलिए उसने खुद को संभाला, खुद को समझदारी से बताने की कोशिश की: मुझे चीजें दिख रही होंगी. बेहतर होगा घर पहुचना.

यह सही था कि जाने का समय हो गया था, लेकिन फिर भी वह वहीं बैठी रही, शायद पहाड़ फिर खुल जाए और उसे दानिलुश्को के दोबारा दर्शन हो जाएं. इसलिए वह अंधेरा होने तक वहीं रुकी रही. आख़िरकार वह घर चली गई, लेकिन पूरे रास्ते वह सोचती रही: आख़िरकार मैंने दानिलुश्को को देख लिया.

वह आदमी जिसने उसका पीछा करने की कोशिश की थी, वो पहले वापस आ गया था और उसने देखा कि कात्या का घर अभी भी बंद था. इसलिए वह छिप गया और यह जानने का इंतजार करने लगा कि वह क्या लेकर आएगी. जैसे ही उसने उसे आते देखा उसने खुद उसके रास्ते में खड़ा हो गया.

"तुम कहाँ गयीं थीं?" उसने पूछा.

"सर्पेंट हिल पर."

"रात को? किसलिए?"

"डैनिलो को देखने के लिए."

वह आदमी वापस चला गया, और अगले दिन पूरे गाँव में कानाफूसी होने लगी.

"मृत व्यक्ति की दुल्हन अब पूरी तरह पगला गई है. वो रात में सर्पेंट हिल पर जाती है, एक ऐसे आदमी की तलाश में जो एक लाश है. क्या होगा अगर वह पागल पूरी पहाड़ी को आग लगा दे?"

उसके भाई-बहनों ने वो बात सुनी और वे कात्या को डांटने और उससे बहस करने के लिए फिर से दौड़कर उसके पास आए. लेकिन कात्या ने उनकी एक भी बात नहीं सुनी. उसने उन्हें वह पैसे दिखाए जो उसे उस दिन मिले थे.

"तुम्हें क्या लगता है कि यह पैसे कहां से आए? ऐसे कई अच्छे कारीगर हैं जिनका माल व्यापारी नहीं खरीदते हैं, लेकिन देखो उन्होंने मुझे पहली बार ही कितना भुगतान किया! ऐसा क्यों है?"

बेशक, उन्होंने उसकी सफलता के बारे में सुना था, और उन्होंने उससे कहा: "तुम भाग्यशाली हो. इसमें कुछ भी अजीब नहीं है."

"भाग्य से ऐसा कुछ नहीं होता." उसने उनसे कहा, "डेनिलो ने ही मेरे लिए वहां पत्थर रखा था और उस पर पैटर्न बनाया था."

भाई हँसे, बहनों ने अपने कंधे उचकाए.

"वह पागल हो गई है! हमें यह बात जज को बताना चाहिए अन्यथा वह वास्तव में हम सभी को जला सकती है."

बेशक, उन्होंने जज को नहीं बताया क्योंकि उन्हें अपनी बहन के बारे में बुरा बोलने में शर्म आती थी. परन्तु जब वे बाहर गए तो आपस में सहमत हो गए. "हमें उस पर नजर रखनी चाहिए. वह जहां भी जाए, तब हम किसी को तुरंत उसके पीछे जाना चाहिए."

कात्या उनके साथ दरवाज़े तक गई, और उनके पीछे दरवाज़ा बंद किया और पत्थर के नए टुकड़े पर काम करने गई. उसने इसे एक संकेत के रूप में लिया, यह पत्थर कैसा होगा... अगर यह फिर से उसी तरह का निकला, तो उसने सोचा, फिर मैं जो चीजें देख रही हूं, तो वास्तव में वो दानिलुश्को की दें होगी.

इसलिए वह अपना काम जल्दी-जल्दी करने लगी. वह देखना चाहती थी कि क्या पत्थर के अंदर कोई वास्तविक पैटर्न था. वह रात भर भी काम करती रही. उसकी एक बहन जागी थी, उसने कात्या के घर में रोशनी जलती देखी, वह खिड़की की ओर भागी और शटर की दरार से अंदर झाँकने लगी. फिर वह आश्चर्य से हांफने लगी.

"उसे नींद भी नहीं आती! वो जिस हाल में हैं वो एक बहुत भयानक स्थिति है!"

कात्या ने स्लैब को खोला और घिसा और वहाँ एक नया पैटर्न था. नया पैटर्न वास्तव में पहले से भी बेहतर था. एक पक्षी, पेड़ से नीचे उड़ रहा था, उसके पंख फैले हुए थे, और दूसरा उससे मिलने के लिए जमीन से ऊपर उड़ रहा था. यह पैटर्न पांच बार दोहराया गया था. और कहाँ काटना है उसमें ठीक-ठीक दिखाया गया था. कात्या ने सोचना बंद नहीं किया. वह उछलकर बाहर भागी. बहन उसके पीछे दौड़ी, रास्ते में भाइयों के दरवाज़े पर दस्तक दी - जल्दी करो, जल्दी करो, भागो! वे भी भागे, और अन्य लोग भी आए. उजाला होने लगा था. वे कात्या को गुमेश्की के पास से भागते हुए देख सकते थे. वे सभी उसके पीछे हो लिए, लेकिन कात्या ने यह भी नहीं देखा कि लोग उसका पीछा कर रहे थे. वह खदान के पार भागी, और फिर सर्पेंट हिल के चारों ओर थोड़ा धीमी गति से गई. बाकी सभी लोग भी थोड़ा धीमे चलने लगे, वे देखना चाहते थे कि वह क्या करेगी.

कात्या अपने सामान्य रास्ते से पहाड़ी पर चढ़ गई. उसने अपने चारों ओर देखा, और जंगल कुछ अजीब लग रहा था. उसने एक पेड़ को छुआ और वह पॉलिश किए हुए पत्थर की तरह ठंडा और चिकना था. और उसके पैरों के नीचे की घास भी पत्थर की थी, और वहां अभी भी अंधेरा था... मुझे पहाड़ के नीचे होना चाहिए, उसने सोचा.

हर कोई इधर-उधर भाग रहा था, उन्हें नहीं पता था कि क्या करना है. "वह कहाँ चली गई? वह बहुत करीब थी, अब वह कहाँ गायब हो गई!" वे सभी उत्साहित होकर इधर-उधर दौड़े और पुकारने लगे: "क्या वह वहाँ है?"

लेकिन कात्या पत्थरों के जंगल से गुज़र रही थी, सोच रही थी कि वह डेनिलो को कैसे ढूंढ सकती थी. वह चलती रही और चलती रही, और पुकारती रही: "डैनिलो, तुम कहाँ हो?"

उसकी पुकार जंगल में गूँज उठी और टहनियाँ एक साथ टकराकर कहने लगीं: "यहाँ नहीं! यहाँ नहीं! यहाँ नहीं!" लेकिन कात्या ने हार नहीं मानी.

"डैनिलो, तुम कहाँ हो?"

पेड़ों ने फिर उत्तर दिया: "यहाँ नहीं! यहाँ नहीं! यहाँ नहीं!"

और फिर कात्या ने पुकारा: "डैनिलो, तुम कहाँ हो?"

तभी पहाड़ की मालकिन अचानक उसके सामने आ गई.

"तुम मेरे जंगल में क्यों आई हो?" उसने पूछा. "तुम क्या कुछ पत्थर चाहती हो? यह पत्थर? जो चाहो चुनो और ले जाओ!"

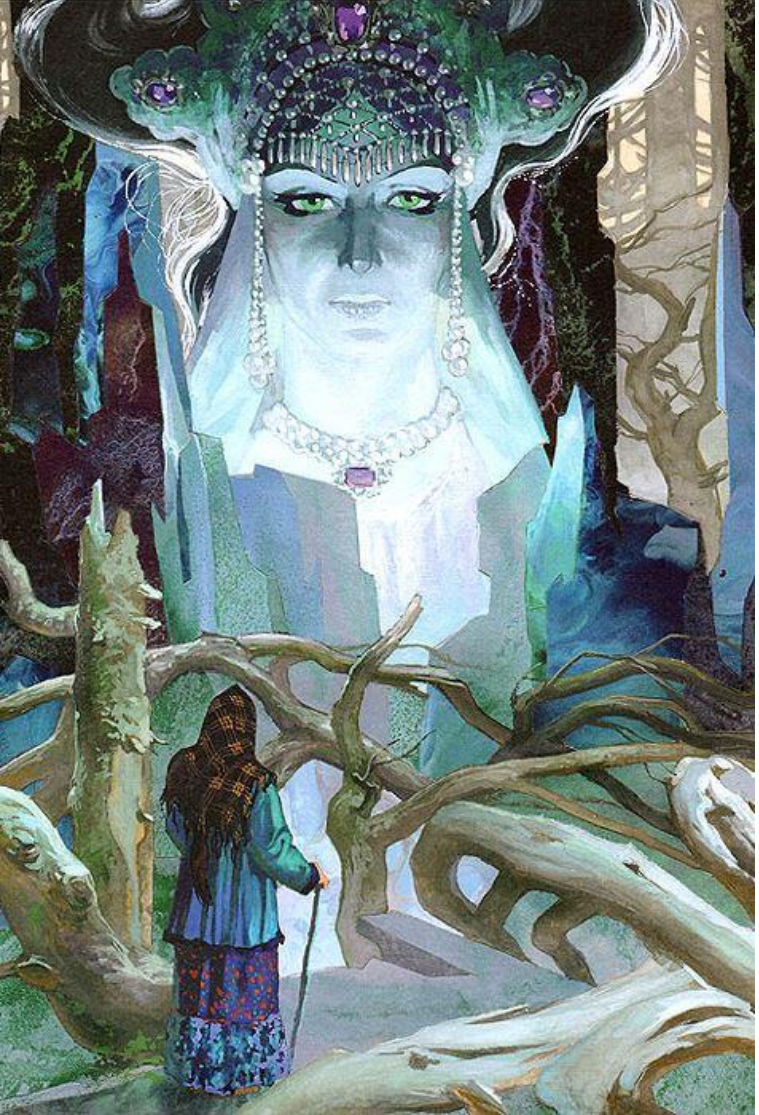

लेकिन कात्या ने उत्तर दिया: "मुझे तुम्हारे मृत पत्थर नहीं चाहिए! मुझे मेरा जीवित दानिलुश्को दे दो! तुमने उसे कहाँ छिपाया है? तुम्हें किसी अन्य लड़की के प्रेमी को फुसलाने का क्या अधिकार है?"

वो लड़की बड़ी दमदार है. उसे सही सबक सिखाओ. और वह मालकिन थी! लेकिन मालकिन, वहां चुपचाप खड़ी रही.

"तुम्हें और क्या कहना है?"

"केवल एक ही चीज़ - मुझे डेनिलो दे दो! वो तुम्हारे पास है..."

मालकिन ज़ोर से हँसने लगी, और फिर उसने कहा: "मूर्ख लड़की, क्या तुम्हें पता है कि तुम किससे बात कर रही हो?"

"मैं अंधी नहीं हूं," कात्या चिल्लाई. "मैं देख सकती हूं कि तुम कौन हो. लेकिन मैं तुमसे नहीं डरती, बिल्कुल नहीं! तुम जितनी भी चालाक हो, फिर भी डैनिलो मेरे बारे में सोचता है. मैंने इसे स्वयं देखा है. आह - मैं उसमें तुमसे आगे हूँ!"

तब मालकिन ने कहा: "चलों हम सुनें कि वह खुद क्या कहता है."

हर समय जंगल में अंधेरा रहता था, लेकिन अब ऐसा लग रहा था कि वह जीवंत हो उठा है. वहां रोशनी हो गई, घास सभी रंगों से जगमगा उठी, और पेड़ - हर एक-दूसरे से अधिक सुंदर लग रहा था. एक खुले स्थान के अंत में एक घास का मैदान था जिस पर पत्थर के फूल उग रहे थे, और सुनहरी मधुमक्खियाँ उन पर चिंगारी की तरह चमक रही थीं. यह सब इतना सुंदर था कि आप उसे बिना थके उम्र भर देख सकते थे. और फिर कात्या ने डेमिलो को उस जंगल में से भागते हुए आते देखा. सीधे उसके पास. और वह उससे मिलने के लिए दौड़ पड़ी.

"दानिलुश्को!"

"इंतज़ार करो!" मालकिन ने आदेश दिया, और फिर उसने कहा: "ठीक है, मास्टर शिल्पकार डेनिलो, अब तुम्हें चुनना होगा. यदि तुम उसके साथ जाते हो तो तुमको वो सब भूलना होगा जो मेरा है, यदि तुम यहां रहते हो तो तुम्हें उस लड़की को और सभी जीवित लोगों को भूल जाना होगा."

"जीवित लोग," डेनिलो ने कहा, "मैं उन्हें कभी भूल नहीं सकता, और मैं उन्हें हर मिनट याद करता हूं."

फिर मालकिन बहुत प्यार से मुस्कुराई.

"तुम जीत गई, कात्या! अपने शिल्पकार को ले जाओ. और तुम्हारी बुद्धि और विश्वास के लिए मेरे पास तुम्हारे लिए एक उपहार है. डैनिलो को वह सब याद रखने दो जो उसने यहां सीखा है, केवल मैं हूं - जिसे उसे हमेशा के लिए भूल जाने दो." और एक पल में घास का मैदान और अद्भुत फूल मुरझा गये और गायब हो गये. "और अब तुम बाहरी दुनिया में वापस जाओ," मालकिन ने कहा, और उसे चेतावनी दी: "तुम, डेनिलो, पहाड़ के बारे में एक शब्द भी किसी से मत बोलना. तुम लोगों को बताना कि तुम दूर-दराज़ एक मास्टर शिल्पकार के पास नया कौशल सीखने के लिए गए थे. और तुम, कात्या, दोबारा यह सोचने की हिम्मत मत करना कि मैंने तुम्हारी प्रिय को बहकाया था, वह खुद उस चीज़ के लिए आया था जिसे वह अब भूल गया है."

तब कात्या नीचे झुकी.

"मेरे तीखे शब्दों के लिए मुझे माफ कर दो."

"ऐसा ही हो," मालकिन ने कहा. "पत्थर को क्या चोट लग सकती है? मैं यह तुम्हारे लिए कह रही हूं, कि तुम अपने प्रेम को कभी ठंडा नहीं होने मत दो."

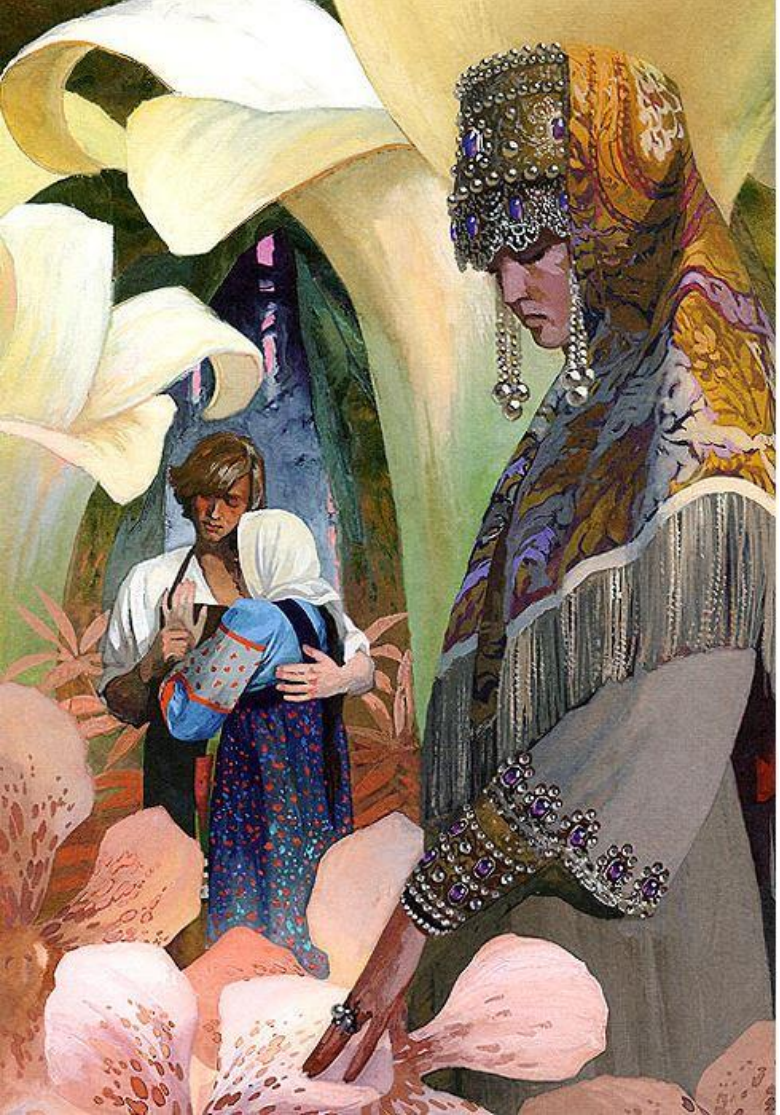

कात्या और डैनिलो जंगल से होकर चले; उनके पैरों के नीचे अँधेरा और खुरदरा था, झाड़ियां और गड्ढे थे. उन्होंने चारों ओर देखा और पाया कि वे गुमेशकी के नीचे खदान में थे. अभी काफी जल्दी थी, वहाँ कोई नहीं था. इसलिए वे चुपचाप घर की ओर चल दिए. और वे सभी जो कात्या के पीछे दौड़ रहे थे, वे अभी भी जंगल में पुकार रहे थे: "क्या तुमने कात्या को देखा है?" उन्होंने बहुत खोजा, परन्तु वह उन्हें नहीं मिली, इसलिए वे घर वापस चले गए, और वहाँ पर डेनिलो खिड़की के पास बैठा था.

बेशक, वे सचमुच डरे हुए थे. वे और दूर चले गए और एक साथ प्रार्थना और मंत्र बुदबुदाने लगे. लेकिन फिर उन्होंने डेनिलो को अपना पाइप भरते हुए देखा. खैर, इससे मामला सुलझ गया. उन्होंने सोचा, एक मरा हुआ आदमी पाइप नहीं पी सकता है.

वे एक-एक करके लोग थोड़ा करीब आने लगे. घर में कात्या थी, जो चूल्हा गर्म कर रही थी, और जितना हो खुश हो सकती थी उतना खुश थी. काफी समय बाद लोगों ने उसे इतना खुश देखा था. फिर उन्होंने साहस किया और सीधे उसके घर में गए और सवाल पूछने लगे.

"तुम इतने समय से कहाँ थे, डेनिलो?"

"मैं कोल्यवन गया था," उसने कहा, "मैंने एक कुशल शिल्पकार के बारे में सुना था. यहाँ कोई भी उससे अधिक कौशल और कला वाला शिल्पकार नहीं था. मैंने सोचा कि मैं वहां जाऊंगा और उससे कुछ सीखूंगा. पिताजी, उन्हें शांति मिले, मैं नहीं चाहते थे कि मैं वहाँ जाऊँ, इसलिए मैं बिना किसी को बताए वहां चला गया. वह बात मैंने केवल कात्या को बताई."

"लेकिन क्यों," उन्होंने पूछा, "तुमने अपना वह प्याला क्यों तोड़ा?"

"देखो, इस तरह की चीजें होती हैं," उसने कहा. "मैं तब मौज-मस्ती करके घर आया था...उस दिन मैंने बहुत ज्यादा पी ली थी... लेकिन वैसा नहीं हुआ जैसा मैं चाहता था, इसलिए मैंने प्याला लिया और उसे तोड़ दिया. यह किसी के साथ भी हो सकता है. इस तरह की बातों में कुछ दम नहीं है."

तब कात्या के भाई-बहन उससे पूछने लगे कि उसने उन्हें कोल्यवन के बारे में क्यों नहीं बताया? लेकिन उन्हें भी उससे कुछ खास हासिल नहीं हुआ, केवल तीखे शब्द ही मिले.

"जब अन्य लोग अपनी ज़ुबान चलाते हैं, तो मैं चुप रहती हूँ. क्या मैं तुम्हें नहीं बताती रही कि डैनिलो जीवित था! और तुमने क्या किया? मुझ पर मंगेतर धकेलते रहे और मुझे गलत ठहराने की कोशिश करते रहे. मेज पर खाने को आओ, मैंने अभी-अभी कुछ अंडे तले हैं."

तो यह इसका अंत था. वे, उसके भाई-बहन, कुछ देर वहीं बैठे रहे, इधर-उधर की बातें करते रहे, और फिर अपने-अपने रास्ते चले गए. शाम को डेनिलो ने जज को बताया कि वह वापस आ गया था. बेशक, जज थोड़ा चिल्लाया, लेकिन उससे सब कुछ ठीक हो गया.

इसलिए डेनिलो और कात्या अपने घर में एक साथ रहने लगे. लोग कहते हैं कि वे खुश थे, उनमें कभी कोई लड़ाई-झगड़ा नहीं नहीं होता था. डेनिलो को उसके काम के कारण हमेशा “माउंटेन क्राफ्ट्समैन” कहा जाता था, क्योंकि कोई भी उसकी काबलियत के करीब नहीं था. इसलिए वे संपन्न हुए. केवल कभी-कभी डेनिलो कुछ विचारशील हो जाता था. बेशक कात्या को पता था कि वह क्या सोच रहा होगा, लेकिन वो उससे कभी कुछ नहीं कहती थी.